उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद, रामनगर (नैनीताल)	हाईस्कूल परीक्षा (उत्तराखण्ड) "अ" 10 पन्ने

केन्द्र संख्या की मुहर	केन्द्र व्यवस्थापक के हस्ताक्षर

नोट–केन्द्र के नाम की मुहर उत्तरपुस्तिका के किसी भी भाग पर न लगाएं।

नोट–परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका के किसी भी भाग में अपना नाम व केन्द्र का नाम न लिखें।

उत्तर पुस्तिका की संख्या–	$ब_1$	$ब_2$	$ब_3$	$ब_4$
हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक–				

परीक्षार्थी द्वारा भरा जायेगा–

अनुक्रमांक (अंकों में)–

अनुक्रमांक (शब्दों में)–

विषय–

प्रश्नपत्र संकेतांक–

परीक्षा का दिन–

परीक्षा तिथि–

कक्ष निरीक्षक द्वारा भरा जाए–

केन्द्र संख्या–

परीक्षा कक्ष संख्या–

उपरोक्त सभी प्रविष्टियों की जाँच मेरे द्वारा सावधानीपूर्वक कर ली गई है।

कक्ष निरीक्षक का नाम–

दिनांक–

हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक–

प्रमाणित किया जाता है कि मैंने इस उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन समुचित प्रश्न–पत्र संकेतांक तथा मूल्यांकन निर्देशों के अनुसार किया है। प्राप्तांकों का मुखपृष्ठ पर अग्रसारण कर प्राप्तांकों एवं प्राप्तांकों के योग का मिलान कर लिया गया है। एवार्ड ब्लैंक में प्राप्तांकों की अंकना कर उनका पुनः मिलान भी कर लिया है। किसी भी प्रकार की त्रुटि के लिए मैं उत्तरदायी रहूँगा/रहूँगी।

परीक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या...

1. अंकेक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या.....

2. अंकेक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या.....

सन्निरीक्षा प्रयोगार्थ

सन्निरीक्षा पूर्व अंक–

सन्निरीक्षा पश्चात् अंक–

त्रुटि का प्रकार–

दिनांक–

हस्ताक्षर निरीक्षक–

परीक्षक, भिन्न तालिका में प्रत्येक प्रश्न तथा उसके खण्डों के प्राप्तांकों का वितरण यथास्थान करें।

प्रश्न संख्या	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	योग
01											
02											
03											
04											
05											
06											
07											
08											
09											
10											
11											
12											
13											
14											
15											
16											
17											
18											
19											
20											
21											
22											
23											
24											
25											
26											
27											
28											
29											
30											

योग (शब्दों में)– योग (अंकों में)

खण्ड - 'अ'

प्रश्न सं० - 01 के 'क' का उत्तर :-

हिमालय कहने पर भारतवर्ष की भौगोलिक सीमा का ही केवल स्मरण नहीं होता अपितु भारत की पवित्रता का, ऊँचाई का भी स्मरण (बोध) होता है।

प्रश्न सं० - 01 के 'ख' का उत्तर :-

राजा पृथु ने पृथ्वी को इसलिए डराया-धमकाया क्योंकि पृथ्वी के बंजर होने के कारण, प्रजा दुःख से पीड़ित होने लगी थी, देवताओं को यज्ञ भाग मिलना कठिन होने लगा था, उसके पश्चात राजा पृथु ने पृथ्वी को डराया-धमकाया,

प्रश्न सं० - 01 के 'ग' का उत्तर :-

हिमालय 'आत्मदान में विश्वास करने वाली संस्कृति' का अग्रदूत है।

प्रश्न सं० - 01 के 'घ' का उत्तर

पर्वतराज हिमालय का बड़प्पन केवल नगाधिराज होने के कारण नहीं है अपितु उसका बड़प्पन गंगा जैसी नदियों को जन्म देने के कारण है,

प्रश्न सं०-01 के 'ङ') का उत्तर :-

उपर्युक्त गद्यांश का उपर्युक्त शीर्षक
' देवात्मा हिमालय का महत्व '

प्रश्न सं०-03 :—

रामनगर
(नैनीताल)

दिनाँक:- 3/03/2020

प्रिय मित्र, आस्था

सस्नेह नमस्कार, मुझे टेलीफोन माध्यम से ज्ञात हुआ कि तुम इस वर्ष अपनी कक्षा एंव सम्पूर्ण विद्यालय में प्रथम आयी हो और आपने सभी विषयों में सर्वोच्च अंक प्राप्त करके अपने माता-पिता एंव परिवार के सभी बन्धु बान्धवों को गौरवान्वित किया है।
जिससे आपके माता-पिता का सीना गर्व से चौड़ा हो गया है।
मैं अपने ईष्ट देवी-देवताओं से प्रार्थना करूँगी कि, तुम प्रतिवर्ष इसी तरह अपनी कक्षा व अपने विद्यालय में सर्वोच्च अंकों से उत्तीर्ण हो,

मेरे माता जी- पिताजी की ओर से आपको ढेर सारी बधाईयाँ कि तुम अपने माता पिता व अपने कुल का नाम इसी प्रकार से उज्जवलित करोगे, इसी तरह तुम शिक्षा के क्षेत्र के अलावा अन्य क्षेत्रों में प्रगति की ओर अग्रसर रहो।

अंत में मेरी तरफ से अपने माता- पिता व परिवार के बन्धु बान्धवों को सप्रेम नमस्कार और आपको ढेर सारी बधाईयाँ।

सधन्यवाद

आपकी प्रिय सहेली
क ख ग

प्रश्न सं०-04 क्रियापद छाँटिए।

प्रश्न सं०-04 का 'क'

विद्यार्थी परीक्षा भवन में जा रहे हैं।

क्रियापद :- जा रहे हैं।

उसका भेद :- सकर्मक क्रिया व समापिका क्रिया

प्रश्न 04 का 'ख'

वह पानी पी रहा है।

उ०:- क्रियापद :- पी रहा है।

क्रिया का भेद :- सकर्मक क्रिया व समापिका,

यथा निर्देश उत्तर लिखिए -

प्रश्न सं० - 4 का 'ग' (क्रिया विशेषण छाँटकर लिखें)

(ग) छात्र ध्यान पूर्वक पढ़ते हैं।

उ०:- क्रिया :- पढ़ते हैं।

क्रिया विशेषण :- ध्यान पूर्वक

प्रश्न सं०- 4 का 'घ' (समुच्चय बोधक)

(घ) रेल से जाने की अपेक्षा तुम कार से चले जाओ।

समुच्चय बोधक शब्द :- अपेक्षा

क्योंकि अपेक्षा शब्द एक वाक्य को दूसरे

वाक्य से जोड़ने का कार्य कर रहा है,

प्रश्न सं० - 5 (यथा - निर्देश)

'क'

(क) 'जिन विद्यार्थियों ने परिश्रम किया वे उत्तीर्ण हो गए,' किस प्रकार का वाक्य है,

उ०:- मिश्र वाक्य

प्रश्न सं० - 5 का 'ख'

(ख) प्रश्नवाचक वाक्य,

उ०:- तुम क्या कर रहे हो?

प्रश्न सं० 5 'ग' :-

(ग) अशोक पुस्तक पढ़ता है, (कर्मवाच्य में)

उ०:- अशोक के द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है

प्रश्न सं० 5 का 'घ'

(घ) अमित से दौड़ा नही जाता है, (कर्तृवाच्य)

उ०:- अमित नही दौड़ता है,

प्रश्न सं० - 6 का 'क'

(क) निम्नलिखित शब्दों में से 'तारा' शब्द का अर्थ :-

उ० :- नक्षत्र।

प्रश्न सं० - 6 के 'ख'

(ख) 'चन्द्रमा' का पर्यायवाची शब्द बताइये

उ० :- राकेश।

प्रश्न सं० 7 का 'क'

क) गोपियों के लिए 'हारिल की लकरी' कौन है और किस रूप में? स्पष्ट कीजिए?

उ० :- गोपियों के लिए 'हारिल की लकरी' श्रीकृष्ण हैं।
जिस प्रकार हारिल पक्षी किसी लकड़ी को अपने पंजों में दबाए रखता है, और सदैव उसको अपने साथ रखता है,

उसी प्रकार गोपियाँ भी अपनी तुलना हारिल पक्षी से करती हैं कि हम गोपियों ने भी श्री कृष्ण की मनमोहक अपने मन, मस्तिष्क में धारण कर (दृढ़) ली है। इसीलिए हम सदैव श्री कृष्ण का ही नाम जपती हैं और उन्हें अपने सम्मुख उपस्थित मानती हैं।

प्रश्न सं०-7 का 'ख'

(ख) गोपियों को 'करुई ककरी' की तरह क्या लगता है और क्यों?

उ०:- गोपियों को 'करुई ककरी' की तरह श्री कृष्ण द्वारा भिजवाए गए उद्धो के माध्यम से योग साधना के उपदेश लगते हैं जिस प्रकार किसी व्यक्ति के मुँह में करुई ककरी आने पर उसके मुख का स्वाद बदल जाता है उसी प्रकार गोपियों को यह योग सन्देश की बातें सुनकर उनका दुःख और गहरा हो जाता है, इसीलिए गोपियों को योग सन्देश की बातें करुई ककरी के समान लगता है।

प्रश्न सं०-7 का 'ग'

(ग) गोपियों के लिए 'व्याधि' का आशय क्या है।

उ०:- गोपियों के लिए व्याधि का आशय एक शारिरीक रोग से है जिसके बारे में गोपियों ने ना ही कभी सुना व ना ही कभी देखा था, गोपियों के लिए व्याधि श्री कृष्ण द्वारा भिजवाए गए योग साधना से है जो उनके लिए शारीरिक रोग है।

प्रश्न सं० - 8 का 'क'

(क) राम - लक्ष्मण - परशुराम संवाद में परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष टूटने के लिए कौन - कौन से तर्क दिए ?

उ०:- राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद में लक्ष्मण ने धनुष टूट जाने पर निम्नलिखित तर्क दिए,

लक्ष्मण ने धनुष टूटने का सर्वप्रथम कारण धनुष का पुराना होना बताया जिसके कारण श्री राम जी ने उसे नया समझकर धोखे से उठा लिया जिससे उनके छूते ही

धनुष टूट गया।

लक्ष्मण जी ने कहा हे देव! हमने तो बाल्यावस्था में ऐसे अनेक धनुष तोड़े हमारे नजर में तो सभी धनुष समान हैं फिर भी आपकी इस धनुष के प्रति इतनी श्रद्धा व ममता क्यों है?

इसी प्रकार लक्ष्मण जी ने धनुष टूटने पर अनेक प्रकार के तर्क दिए।

प्रश्न सं०-08 का 'ख'

(ख) 'अट नहीं रही है' कविता के आधार पर फागुन की आभा का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए?

उ०:- 'अट नही रही' कविता में कवि ने फागुन की सौन्दर्यता का वर्णन किया है, कवि कहते हैं फागुन की सुन्दरता इतनी मनमोहक व आकर्षित करने वाली है जो पृथ्वी में नही समा पा रही है अपितु फागुन की आभा वायुमण्डल के चारो ओर मृदु सुगंध की भाँति बिखरी हुई है

'अट नहीं रही है' कविता में कवि ने फागुन की सुन्दरता का मानवीकरण किया है, जिसमें फागुन ने शरीर धारण किया है और उसका स्वागत पेड़ों में लदी डाल लाल-हरे फूलों की माला के रूप में कर रहे हैं।

फागुन की मौसम में चारों ओर उत्साह और हर्षोल्लास बिखरा होता है।

प्रश्न सं० - 9 का 'क'

क) कवि आत्मकथा लिखने से क्यों बचना चाहता है?

उ०:- कवि आत्मकथा लिखने से इसलिए बचना चाहता है कि कवि कहता है कि मेरे जीवन में अनेक दुःख व सुःखों ने प्रवेश किया है परन्तु उनमें से कोई भी किसी भी पाठक के लिए घटना प्रेरणादायी नहीं है अपितु स्वार्थ मात्र की घटनाएं हैं।

उनको पढ़कर के किसी भी पाठक

को लाभ नही पहुँचेगा।
तथा कवि जयशंकर प्रसाद जी कहते है कि इस संसार में मुझसे से भी अधिक लोग है जो आत्मकथा लिखने के योग्य है। मैं अपनी आत्मकथा लिखने योग्य नही हूँ।
इसीलिए कवि अपनी आत्मकथा लिखने से बचना चाहता है।

प्रश्न सं०-1 का 'ख'

(ख) बच्चे की दंतुरित मुस्कान का कवि के मन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उ०:- बच्चे की दंतुरित मुस्कान को देखकर कवि के हृदय पटल पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, कवि उस नन्हे बालक की दंतुरित मुस्कान को देखकर उसे अपलक देखता रहता है।

और जिसके कारण कवि का कठोर मन कोमल हृदय में परिवर्तित हो जाता है।

बालक को देखकर कवि कहता है इस झोपड़ी जलजात खिल उठा हो, कवि कहता है कि इस बच्चे की

द्रुत मुस्कान किसी मृतक में भी जान डाल देती है।

प्रश्न सं० - 10 का 'क' का उत्तर:-

प्राचीन भारत में स्त्री शिक्षा की परम्परा भी थी, अत्रि की पत्नी पत्नी धर्म पर व्याख्यान देते समय घण्टों पांडित्य करके, तथा गार्गी बड़े - बड़े ब्रह्मवादियों को हरा दें, मंडन मिश्र की सह धर्मचारिणी शंकराचार्य के छक्के छुड़ा दें। इस प्रकार हमारे प्राचीन भारत में स्त्रियों को पढ़ाने का चलन था।

प्रश्न सं० 10 का 'ख' का उत्तर

ख) उत्तर :- 'स्त्रियों को पढ़ाना कालकूट और पुरुषों को पढ़ाना पीयूष का घूंट' इस कथन से कवि का आशय है कि हमारे समाज में स्त्री व बालिकाओं को पढ़ाना अनर्थकारी समझा जाता है और इसकी तुलना में

पुरुषों को पढ़ाना कुल का चिराग रोशन करना माना जाता है। कुछ रूढ़िवादी धारणा वाले लोग स्त्रियों को घर की चार दिवारी तक ही सीमित रखते हैं। परन्तु आधुनिक भारत में स्त्री व पुरुषों में समानता आ गयी है 'स्त्रियों को भी पढ़ाना पीयूष का घूँट व पुरुषों को भी पढ़ाना पीयूष का घूँट" माने जाने लगा है।

प्रश्न सं० - 11 का 'क'

क) 'नेताजी का चश्मा' कहानी हमें क्या सन्देश देती है?

उ०:- 'नेताजी का चश्मा' कहानी हमें बहुत प्रेरणादायी सन्देश देती है। कहानी में कैप्टन (चश्मे वाले) के द्वारा देशभक्ति व राष्ट्र प्रेम की भावना का जन संचार किया गया है।

इस कहानी में लेखक 'स्वंय प्रकाश' जी कहते हैं कि हमें अपने देश के महापुरुषों व सेनानियों का मान सम्मान तथा अच्छी भावना रखनी चाहिए

हमें अपने देश के प्रति निष्ठावान तथा कर्मनिष्ट होना चाहिए अगर हम किसी महापुरुष के प्रति श्रद्धा न रखें तो हमे पाठ के जैसे मूर्ति लगाकर किसी भी प्रकार का राष्ट्रहित के प्रति आडम्बर नही करना चाहिए,

---

प्रश्न सं० 11 का 'ख'

ख) बालगोबिन भगत की कबीर पर श्रद्धा किन - किन रूपों में व्यक्त हुई ?

उ०:- बाल गोबिन भगत की कबीर के प्रति श्रद्धा निम्नलिखित तथ्यों के आधार पर व्यक्त हुई।

बालगोबिन भगत कबीर के जैसे कबीर पंथी टीका लगाते थे तथा सिर पर रामानंदी टीका लगाते थे

जिस प्रकार कबीर धार्मिक मान्यताओं तथा सामाजिक मान्यताओं पर विश्वास नही करते थे उसी प्रकार बाल

गोबिन भगत भी सामाजिक मान्यताओं पर विश्वास नही करते है।

फसल की उगाई के पश्चात बालगोबिन भगत के व्यवहार अनुसार वे पूरी फसल को कबीर मठ में चढा देते तथा जो प्रसाद के रूप में मिलता उससे ही परिवार का पालन पोषण करते।

प्रश्न सं०-12 का 'क'

(क) 'एक कहानी यह भी' की लेखिका का नाम बताइये। लेखिका के व्यक्तित्व पर किन-किन व्यक्तियों का प्रभाव पड़ा?

उ०:- 'एक कहानी यह भी' की लेखिका 'मन्नू भण्डारी' जी है, लेखिका के व्यक्तित्व पर निम्नलिखित व्यक्तियों का प्रभाव पड़ा।

लेखिका के व्यक्तित्व पर सबसे अधिक प्रभाव उसके पिता का पड़ा जिस प्रकार लेखिका के पिता एक अच्छे राजनीतिज्ञ थे उसी प्रकार लेखिका के मन में

अपने पिता के द्वारा कुण्ठा, प्रतिद्वंद्वा का भाव जागृत हुआ जिसके द्वारा लेखिका कुशल राजनीतिज्ञ हुई।

उसके पश्चात लेखिका के व्यक्तित्व में उनकी प्राध्यापक 'शीला अग्रवाल' का भी प्रभाव पड़ा, लेखिका 'सावित्री गर्ल्स स्कूल' में पढ़ती थी जिसके कारण उनकी प्रधानाचार्य शीला अग्रवाल के द्वारा एक कुशल साहित्यकार बनने की प्रेरणा मिली

लेखिका के व्यक्तित्व पर उनकी माँ का कोई प्रभाव नहीं पड़ा क्योंकि लेखिका की बहुत साधारण प्रवृति की महिला थी।

प्रश्न सं- 12 का 'ख'

ख) कुछ पुरातन पंथी लोग स्त्रियों की शिक्षा के विरोधी थे, द्विवेदी जी ने क्या 2 तर्क दिए।

30:- कुछ पुरातन पंथी लोगों ने स्त्रियों की विरोध में तर्क दिए उन सभी उदारवादी धारणा वाले व्यक्तियों को मुँह तोड़ जवाब देने के लिए द्विवेदी जी ने निम्नलिखित दिये,

01) द्विवेदी जी का मानना है कि अगर प्राचीन काल में स्त्रियों को पढ़ाने की परम्परा नही थी तो पुरुषों को पढ़ाने की परम्परा भी नही रही हो

प्राचीन काल में स्त्री को शिक्षा देने का चलन था, क्योंकि उस समय सभी लोग संस्कृत भाषा में वार्ता करते थे तो संस्कृत विद्वानों की भाषा है तो स्त्रियों को भी संस्कृत भाषा का ज्ञात था,

स्त्रियों को पढ़ाने के सम्बंध में द्विवेदी जी उदा०:- के लिए शकुन्तला ने संस्कृत में श्लोक की रचना की तथा अत्रि की पत्नी धर्म का व्याख्यान देती थी, मंडन मिश्र की सह धर्मचारिणी ने शंकराचार्य के छक्के छुड़ा दिए,

इस प्रकार द्विवेदी जी ने अनेक तर्कों के द्वारा स्त्रियों को पढ़ाने का समर्थन किया,

-0-

प्रश्न सं० '13' का 'क' का उ०

उ०:- 'माँता के अँचल' पाठ में माता पिता का बच्चे के प्रति जो वात्सल्य प्रकट हुआ वो इस प्रकार है।

भोलानाथ अपने पिता से अधिक स्नेह करते थे तथा वे अपने हर दैनिक क्रियाकलाप अपने पिता के साथ ही पूर्ण करते थे, भोलानाथ के पिता उसे कबड्डी एंव अन्य खेल खिलाते और स्वंय हारकर उसका विश्वास बढाते, बालक को खट्टा मीठ्ठा चुम्मा देते।
फिर भी भोलानाथ विपत्ति के समय अपने पिता के पास न जाकर अपनी माता के पास जाता है क्योंकि उसे ज्ञात था कि विपत्ति के समय माता से अधिक पीडा और कोई नही समझेगा।

प्रश्न '13' का 'ख' का उ०:-

उ०:- जॉर्ज पंचम की नाक' पाठ के

रानी एलिजाबेथ के दर्जी की परेशानी यह थी कि रानी एलिजाबेथ ने नेपाल, भारत, सिक्किम के दौरे पर जाना था जिसमें उन्होंने किन परिधानों को धारण करना है तथा उनके वस्त्र किस प्रकार के होने चाहिए। यह परेशानी जो रानी एलिजाबेथ के दर्जी की थी यह तर्कसंगत थी क्योंकि दर्जी का उत्तरदायित्व रानी की साज सज्जा था।

प्रश्न सं० 13 का 'ग' का उ० :-

उ० :- "मैं क्यों लिखता हूँ?" के आधार पर लेखक को निम्न प्रकार की बातें लिखने के लिए प्रेरित करती हैं,

लेखक की सामाजिक प्रतिष्ठा और आर्थिक आवश्यकता और लेखनीय कार्य और साहित्यिक क्षेत्र में मान सम्मान की महत्वाकांक्षा प्रेरित करती है।

जिसके माध्यम से वह समाज में एक प्रेरणादायी स्रोत बन सके।

खण्ड 'घ'

प्रश्न सं० - 14 का 'क' का उ०

उ०:- चाणक्य : चन्द्रगुप्तस्य मंत्री आसीत्।

प्रश्न सं० 14 का 'ख' का उ०

उ०:- चाणक्यः उटजे निवसन्ति स्म:

'ग' का उ०:-

उ०:- चौराः कम्बलानि अपहर्तुं चिन्तित वन्तः।

प्रश्न सं० 15 का 'क' उ०:-

उ०:- कूपं " अहं भितरां नीचो आस्मि' खेदं करोति।

ख का 'उ०'

उ०:- कवि कूपं खेदं न कर्तुं कथयति

प्रश्न सं० - 16 का 'क' का उ०

उ०:- सज्जनाः गुणी एंव मृदु वाणी वक्ता भवन्ति,

'ख' का उ०:-

उ०:- कौत्सः वरतन्तु शिष्यः आसीत् ?

'ग' का उ०:-

उ०:- गंगा हिमालयात् प्रवहति,

प्रश्न '17' का 'क'

(क) सज्जनानां सङ्गति सत्सङ्गति भवति

'ख'

(ख) नीर क्षीर विवेकी हंसः आलस्यं त्वमेव तनुषे चेत

'ग'

(ग) - ते चाणक्यः क्षमा प्रार्थितवन्तः
(घ) दुखः विना नैव सुखस्य बोधः

प्रश्न '18' का 'क' (संधि कुल)

(क) ने + अनम

शब्द	संधि	संधि का नाम
ने + अनम्	नयनम्	अयादि संधि

'ख'

(ख) पितृ + आदेश:

शब्द	संधि	नाम
पितृ + आदेश:	पित्रादेश:	दीर्घ सन्धि

प्रश्न '18' का ख

(क) स्वागतम्

शब्द	संधि विच्छेद	संधि नाम
स्वागतम्	सु + आगतम्	यण संधि

(ख) पूर्णेन्दु: – पूर्ण + इन्दु

(गुण संधि

प्रश्न 18 का 'अ'

(i) अनुचर :- अनु उपसर्ग (अनु + चरः)

(ii) अधिभार :- अधि उपसर्ग (अधि + भारः)

प्रश्न 19 का क

छात्रः - अहं छात्रः अस्मि ,

खेलति - बालकः खेलति

कदा - त्वं कदा गमिष्यसि

संस्कृतम् अहं संस्कृतम् पठामि

प्रश्न 02

(i) जल ही/जीवन है

(i) जल का जीवन में महत्व :-

हमारे जीवन में जल में विशेष महत्व है कहा जाता है कि जल नही है तो कुछ नही है अर्थात जल के बिना जीवन संभव नही है जल के अभाव के कारण

प्राणी के जीवन की कल्पना भी नही की जा सकती है इसलिए पुराणों में भी जल का महत्व स्पष्ट किया गया है।

'पृथिव्यां त्रीणी रत्नानि जलमन्नं सुभाषितं मूर्खे पाषाण खण्डेषु रत्न संज्ञा विधीयते'

अर्थात हमारी पृथ्वी में तीन रत्न पाये जाते है। जल अन्न और सुभाषित जो मूर्ख लोग होते है वे पत्थरों में भी भगवान को ढूंढते है।

(ii) **स्वच्छ पेयजल :-** हमारी पृथ्वी में कुल 3/4 भाग पर जल प्राप्त है परन्तु उसमें पीने योग्य जल की मात्रा अत्यंत कम है अधिकांश मात्रा में समुद्री लवणीय जल विद्यमान है।

इसीलिए हमें जल को बचाना चाहिए हमारे शरीर में जल की मात्रा 70% प्रतिशत होती है और इसके माध्यम से शरीर का उचित प्रकार से क्रियान्वयन होता है, इसीलिए जल से अन्न का निर्माण भी होता है।

अन्नाद भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्न सम्भव'

इसीलिए हमें अधिकांश मात्रा में जल का सेवन करना चाहिए जिससे हमारे शरीर के अनेक कष्ट दूर होते हैं।

और हमें ग्रीष्म ऋतु में अधिक जल का सेवन करना चाहिए।

(iii) जल संरक्षण :-

जल संरक्षण का आशय है जल को अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए संग्रहित करना है।

जल के संग्रहण के लिए वर्षा रूपी जल को भी संग्रहित किया जा सकता है। और खेतों की सिंचाई तथा अन्य शारीरिक गतिविधियों के लिए प्रयोग किया जाना चाहिए

जल संरक्षण करने के लिए भारत के अनेक राज्यों में जल संग्रहित किया जाता है। राजस्थान में छतों के ऊपर एक टबनुमा संरचना में जल को संग्रहित किया जाता है।

जल को संग्रहित अनेक प्रकार के लाभ होते हैं।

(iv) प्रदूषण और उसके बचाव

आजकल जल का अत्याधिक दुरुपयोग हो रहा है तथा जल को अत्याधिक प्रदूषित किया जा रहा है।

जल प्रदूषण का अर्थ :-

जल प्रदूषण का शाब्दिक अर्थ होता है जल को प्रदूषित करना और हम अपनी मानवीय गतिविधियों के द्वारा गन्दा किया जा रहा है।

जिससे हमारी पतितपावनी माँ गंगा प्रदूषित हो रही है। माँ गंगा हमें स्वच्छ जल प्रदान कर करती है परन्तु मानवीय क्रियाकलापों के द्वारा वे प्रदूषित हो रही है।

बचाव :- प्रदूषण को रोकने के लिए हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने सन् 2014 को 'नमामि गंगे' परियोजना चलायी

जिसका मुख्य केन्द्र उत्तरप्रदेश से एवं गंगा के प्रवाह क्षेत्र थे यह अब तक चलाये जाने वाली गंगा स्वच्छ मिशन है

प्रदूषण को बचाने के लिए नदियों को प्रदूषित नहीं करना चाहिए

जल ही जीवन है,